पाठ–8

गुलाब सिंह

उसके घर में माता–पिता और एक गुड़िया–सी बहन थी। वह सारे घर का दुलारा था। एक दिन की बात है कि वह बीमार पड़ा। माँ ने उसका खाना बिल्कुल बंद कर दिया था। पर उसका बार–बार कुछ खाने को माँगना, छोटी बहन से न सहा गया। वह चुपके से गुड़ और चने चुरा लाई और खिला दिया, अपने भाई को।

उसके बाद भैया को बुखार चढ़ गया, पर वह तो खिला चुकी थी। अपने भाई के संतोष के लिए वह माँ–बाप का गुस्सा भी सहने को तैयार थी, पर भाई ने गुड़–चने की बात किसी को न बताई। धीरे–धीरे रोग चला गया पर भाई के मन पर बहन के प्रेम की छाप छप गई।

ऐसी एक नहीं अनेक बातें–बहन की, माँ की, उसके मन पर छपी थीं। वह कभी उनसे लड़ता –झगड़ता भी, पर आँखों के आँसू और मन के रंग, उसके मन पर छपी इन तस्वीरों को धो न सके।

एक दिन ऐसी हवा बही कि मुरझाए हुए दिलों में नई जान आ गई। यह हवा उमंगों की हवा थी। बड़ा भारी जुलूस निकलना था। कौमी झंडे का जूलूस था। वहाँ पर बादशाह का हुक्म था कि जुलूस न निकले। शहर में आतंक छा गया। बड़ा अत्याचारी था वह बादशाह।

''बड़ा आया बादशाह। क्यों न निकले जुलूस?क्यों न निकले हमारा झंडा?'' भाई ने बहन से कहा। बहन बोली, ''कौन है यह बादशाह?'' भैया ने कहा, ''ऊहँ, होगा कोई।''

बहन ने पूछा, ''क्यों न निकले जुलूस? क्यों न निकले झंडा?'' भाई कटु स्वर में बोला, ''हमारा देश बादशाह का गुलाम जो है''

उत्तर था– ''तब तो जरूर निकले जुलूस। हम जरूर फहराएँगे अपना झंडा। देखते हैं कौन रोकता है हमें?''

झंडे की तैयारी होने लगी। बहन ने अपनी पुरानी ओढ़नी फाड़कर झंडा बना लिया।

भाई ने उसे खेलने के डंडे से बाँध लिया। झंडा तैयार था।

अब भाई झंडा लेकर चला।

''अरे भाई! जाते कहाँ हो, हम भी साथ चलेंगे।'' बहन आग्रह से बोली।

''पर बहन बड़ी दूर जाना है तुम थक जाओगी।''

''नहीं भैया।''

''नहीं बहन।''

''जुलूस कौन बनाएगा?'' तुम झंडा उठाना, हम जुलूस बनाकर पीछे–पीछे चलेंगे।

''नहीं रानी, तुम जुलूस नहीं.... तुम एक काम करो। हमें रोली का तिलक लगाकर विदा करो जैसे राजकुमारी अपने भाई राजकुमार को विदा करती है।''

बहन ने खुशी से किलकारी के साथ ताली बजाई और दौड़कर थोड़ी–सी रोली, थोड़े–से चावल सजा लाई, थाली में एक दीया भी जल रहा था। भाई की आरती उतारने लगी। मुँह के चारों तरफ घूमती थाली एक आभामंडल बनाने लगी।

उसने देवी–देवताओं के चित्रों में भी वैसा ही आभामंडल देखा था। भाई के चारों तरफ वैसा ही आभामंडल देखकर वह बहुत खुश हुई।

भाई के माथे पर तिलक लगाया, चावल बिखराए। तब भाई ने बहन के पैर छुए और विदा ली। बहन ने भाई के सिर पर हाथ फेरा और बलैयाँ लीं।

अब वह झंडा लेकर चला। बहन दरवाज़े पर खड़ी देखती रह गई। कहानियों में राजकुमारी भाइयों को इसी तरह विदा करती है। वह झंडे को लहराते हुए, ले जाते हुए भाई को दूर तक देखती रही। कुछ दूर जाने पर बादशाह के सिपाहियों ने झंडे वाले को रोका। वह न रुका। बादशाह के सिपाहियों ने गोली चला दी। वह गिरा, झंडा न गिरा। वह उसके हाथ में था। गोली चलते देख कोई उसके पास न आया। बहन ने भाई को गिरते देखा, वह दौड़ पड़ी। भाई खून से लथपथ पड़ा था। वह पुकारती रही '' भैया! भैया!'' भाई के प्राण मानो यह अमृतवाणी सुनकर लौट पड़े। वह बोला, ''तू आ गई, यह झंडा ले।''

बहन ने झंडा थाम लिया। भाई चला गया।

वह रोयी, पर झंडा हाथ में उठाए रही। बादशाह के सिपाही मानो गढ़ जीतकर चले गए। लोग भागे आए। उन्होंने भाई की देह उठाई। आगे–आगे झंडा लिए बहन चलने लगी। बादशाह का हुक्म था–जुलूस नहीं निकलेगा। जुलूस निकला । झंडा नहीं निकलेगा। झंडा निकला और बड़ी शान से निकला।

यह बालक था–गुलाब सिंह, जो अपनी सुगंध बिखेर कर चला गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

दुलारा	–	प्यारा	लथपथ	–	सना हुआ
गढ़	–	किला	देह	–	शरीर
हुक्म	–	आदेश	आभा	–	चमक
किलकारी	–	खुशी से निकली बच्चों की आवाज़			

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

जुलूस, अत्याचारी, आभामंडल, अमृतवाणी।

सोचें और बताएँ

1. घर में कौन–कौन रहते थे?
2. छोटी बहन ने चुपके से क्या खिलाया था?
3. बीमार कौन हो गया था?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. किसका हुक्म था कि जुलूस न निकले –

   (क) बहन का (ग) सिपाहियों का

   (ख) बादशाह का (घ) गाँव के लोगों का ( )

2. झंडा हाथ में लेकर जुलूस निकालने वाला बालक था –

   (क) सुभाष चंद्र बोस (ग) गुलाब सिंह

   (ख) गंगाधर तिलक (घ) झाँसी की रानी ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

1. भाई के सिर पर हाथ फेरा और ..... लीं।

2. बादशाह के सिपाहियों ने ..... चला दी।
3. वह रोई पर ..... हाथ में उठाए रही।

निम्नलिखित वाक्यों को कहानी के कथानक के अनुसार क्रमबद्ध करें

(क) यह बालक था गुलाबसिंह जो अपनी सुगंध बिखेरकर चला गया।
(ख) भाई ने गुड़–चने की बात किसी को न बताई।
(ग) वह झंडे को लहराते हुए, ले जाते हुए भाई को दूर तक देखती रही।
(घ बहन ने झंडा थाम लिया।
(ड) झंडा निकला और बड़ी शान से निकला।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बादशाह ने क्या हुक्म दे रखा था?
2. हमारा देश किसका गुलाम था?
3. भाई पर गोली किसने चलाई?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. बहन ने भाई को किस प्रकार विदा किया था?
2. भाई के गोली लगने पर जुलूस को किसने और किस प्रकार आगे बढ़ाया था ?
3. इस कहानी से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

भाषा की बात

1. सिपाही शब्द का बहुवचन सिपाहियों होता है।
   हिंदी व्याकरण में वचन संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया का संख्याबोधक शब्द होता है। वचन के दो रूप होते हैं (1) एक वचन (2) बहुवचन। अपने शिक्षक की सहायता से निम्नलिखित शब्दों के वचन अंकित कीजिए–
   किताब, लड़कियों, आदमी, घर, बसें, नदियाँ
2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए –
   भाई नें झंडा उठाया और सड़क पर चलने लगा। बहन ने रोली–चावल का तिलक लगाकर भाई को विदा किया। बादशाह के सिपाहियों ने गोली चला दी। बहन को गुस्सा आया। झंडा उठाकर चलने वाला बालक गुलाब सिंह था।
   गद्यांश में रेखांकित शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि का बोध कराते हैं। इस प्रकार के शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

   संज्ञा के तीन भेद होते हैं

1. **व्यक्तिवाचक– व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि नाम शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे– गुलाब सिंह, रमेश, काशी, गंगा।**
2. **जातिवाचक– जिन शब्दों से किसी जाति, पदार्थ, प्राणी तथा उनके समूह का बोध होता**

है उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सिपाही, बादशाह, घर, पहाड़।

3. **भाव वाचक– जिन शब्दों से भाव,पदार्थ में पाए जाने वाले किसी धर्म, गुण, अवस्था आदि का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– गुस्सा, निराशा, प्यार, बुढ़ापा, मिठास।**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर इसमें से संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

उसके घर में माता–पिता और एक गुड़िया–सी बहन थी। वह सारे घर का दुलारा था। एक दिन की बात है कि वह बीमार पड़ा। माँ ने उसका खाना बंद कर दिया था। उसकी बहन चुपके से गुड़ व चने चुरा लाई और खिला दिए अपने भाई को।

पाठ से आगे

1. भाई को गोली लगने के बाद बहन ने जुलूस को आगे बढ़ाया था। यदि आप बहन के स्थान पर होते तो क्या करते ?

यह भी करें

1. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपना बलिदान करने वाले देश भक्तों के बारे में पता लगाएँ व उनके चित्र संकलित कर 'मेरा संकलन' तैयार करें।
2. देश भक्ति की कहानियों को ढूँढ़कर पढ़ें और अपनी कक्षा में सुनाएँ।
3. सभी देशवासी अपने देश से प्रेम करते हैं, उसकी प्रगति में कुछ न कुछ सहायता करते हैं। आपके विचार से निम्नलिखित लोग अपने देश की प्रगति में किस प्रकार सहायता कर सकते हैं –
   किसान, मजदूर, व्यापारी, डॉक्टर, शिक्षक

यह भी जानें

हमारे राष्ट्रीय ध्वज की शान को बनाए रखने के लिए 'भारतीय झंडा संहिता 2002' में राष्ट्रीय ध्वज के लिए कुछ नियम निर्धारित किये गए हैं –

- सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही ध्वज फहराया जाना चाहिए।
- ध्वज की लम्बाई एवं चौड़ाई का अनुपात 3:2 होना चाहिए।
- फहराया जाने वाला झंडा मैला कुचैला अथवा फटा हुआ नहीं होना चाहिए।
- ध्वज की समान चौड़ाई की पट्टियों में सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे हरी पट्टी होनी चाहिए।
- सफेद पट्टी के बीचों–बीच गहरे नीले रंग का 24 धारियों का अशोक चक्र होना चाहिए।
- 15 अगस्त 1947 को प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर आज़ाद भारत का पहला तिरंगा फहराया था। वह तिरंगा हमारे राजस्थान के दौसा ज़िले के आलूदा गाँव के कारीगरों ने तैयार किया था।

तब और अब

पुराना रूप	झण्डा	सुगन्ध	बन्द	डण्डा
मानक रूप	झंडा	सुगंध	बंद	डंडा

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

बाळो माय भुजा पर झेल्यो, भार वहन्ती, बोली यूँ।
धरती माँ को भार हटाइये, मत ना बोझ्याँ मारी तूँ।
(अपने नवजात शिशु को माँ अपनी बाहों पर उठाती हुई बोली कि बेटे तू भी इसी तरह धरती माँ के भार को कम करने की कोशिश करना, उस पर बोझ मत बनना।)

केवल पढ़ने के लिए

हमारा ऊँचा झंडा

एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश
इस झंडे के नीचे निश्चित एक अमिट उद्देश्य।
देखा जागृति के प्रभात में एक स्वतंत्र प्रकाश,
फैला है सब ओर एक–सा एक अतुल उल्लास।
कोटि–कोटि कंठों में कूजित एक विजय–विश्वास,
मुक्त पवन में उड़ उठने का एक अमर अभिलाष!
सबका सुहित, सुमंगल सबका, नहीं वैर–विद्वेष,
एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश।
कितने वीरों ने कर–करके प्राणों का बलिदान,
मरते–मरते भी गाया है इस झंडे का गान।
रखेंगे ऊँचे उठ हम भी अक्षय इसकी आन,
चखेंगे इसकी छाया में रस–विष एक समान!
एक हमारी सुख–सुविधा है, एक हमारा क्लेश,
एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश।
मातृभूमि की मानवता का जाग्रत जय जयकार,
फहर उठे ऊँचे से ऊँचे यह विरोध, उदार।
साहस, अभय और पौरुष का यह सजीव संचार,
लहर उठे जन–जन के मन में सत्य अहिंसा प्यार!
अगणित धाराओं का संगम, मिलन तीर्थ संदेश,
एक हमारा ऊँचा झंडा, एक हमारा देश।
इस झंडे के नीचे निश्चित एक अमिट उद्देश्य।

सियाराम शरण गुप्त